पाठ 5 **अक्टूबर 28-नवम्बर 3**

अब्राहम का विश्वास

सब्त अपराह्न **अक्टूबर 28**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें: उत्प० 15:6; 2 शमू० 11, 12; रोमि० 3:20, 31; 4: 1-17; गला० 3:21-23; 1यूहन्ना 3:4.

याद वचन: *"तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं? कदापि नहीं। वरन् व्यवस्था को स्थिर करते हैं "*(रोमियों 3:31)

बहुत से तौर-तरीकों में रोमियों 4 केवल विश्वास के द्वारा उद्धार के बाइबलीय सिद्धांत का आधार है, और उन हृदय का जिसने सुधार की शुरुआत की। सचमुच 500 वर्ष पूर्व इसी सप्ताह लूथर के साथ शुरू हुआ और ईमानदार प्रोटेस्टेन्टों ने कभी पीछे नहीं देखा है।

अब्राहम को व्यवहार करते हुए - पवित्रता और सद्‌गुण का नमूना जैसे किसी का एक उदाहरण जिसे व्यवस्था के कर्मों के बिना अनुग्रह के द्वारा बचाये जाने की जरुरत थी, पौलुस ने पाठकों की गलतफ़हमी के लिये कोई जगह नहीं छोड़ी। व्यवस्था पालन परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराये जाने के लिये काफी नहीं था, किसी के लिये कौन-सी आशा हो सकती है? यदि यह अब्राहम के साथ अनुग्रह के द्वारा होता, यह किसी के साथ भी, यहूदी और अन्यजाति, वैसा ही होता।

रोमियों 4 में पौलुस उद्धार की योजना में तीन बड़े चरणों को प्रकट करता है: (1) ईश्वरीय आशीष की प्रतिज्ञा (अनुग्रह की प्रतिज्ञा), (2) उस प्रतिज्ञा पर मानव प्रतिक्रिया (विश्वास की प्रतिक्रिया), एवं (3) ईश्वर की धार्मिकता घोषणा, खाते में डाला गया उनमें जो विश्वास करते हैं (धार्मिकता)। यह है कैसे इसने अब्राहम के साथ काम किया, और यह कैसे हमारे साथ काम करता है।

यह याद रखना निर्णायक है कि पौलुस के लिये उद्धार अनुग्रह के द्वारा है; यह कुछ है जिसे हमें दिया जाता है, जौभी कि हम इसके हकदार हैं, तब इसके आभारी होते, और यदि इसके आभारी हुए, यह हम पर उधार है एक उपहार नहीं। जैसे कि हम भ्रष्ट और पराजित हैं, उद्धार एक उपकार होना चाहिए।

केवल विश्वास के द्वारा उद्धार के विषय उसके तर्क को सिद्ध करने के लिये पौलुस पूरी तरह उत्पत्ति की किताब में जाता है, उत्पत्ति 15:6 को उद्धृत करते हुए "उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धार्मिकता गिनी।" बाइबल की शुरुआती पृष्ठों में यहाँ पर विश्वास के द्वारा धार्मिकता है।

रविवार **अक्टूबर 29**

व्यवस्था

पढ़ें: रोमियों 3:31. यहाँ पर पौलुस का तर्क क्या है? ऐडवेंटिस्टों के तौर पर यह तर्क हमारे लिये क्यों महत्त्वपूर्ण है?

पौलुस स्पष्ट रूप से इस अनुच्छेद में व्याख्या करता है कि विश्वास परमेश्वर की व्यवस्था को व्यर्थ नहीं ठहराता। परन्तु यहाँ तक कि वे जिन्होंने व्यवस्था को माना वरन् व्यवस्था के संपूर्ण पुराने नियम के संग्रह को, इसके द्वारा कभी बचाये नहीं गये। पुराने नियम की भक्ति (धर्म) जैसे कि नये का, हमेशा परमेश्वर के अनुग्रह में से था जो पापियों को विश्वास के द्वारा दिया गया था।

पढ़ें: रोमियों 4: 1-8. यह किस प्रकार दर्शाता है कि पुराने नियम में भी, उद्धार

विश्वास के द्वारा था और व्यवस्था के कामों के द्वारा नहीं।

इस पुराने नियम के विश्लेषण अनुसार, अब्राहम धर्मी गिना गया क्योंकि उसने "परमेश्वर पर विश्वास" किया। इसलिये पुराना नियम स्वयं विश्वास के द्वारा धार्मिकता सिखाता है। अत: कोई उलझन कि विश्वास व्यवस्था को "व्यर्थ ठहराता" है झूठा है; (ग्रीक में कतरजीवो (Katargeo) "व्यर्थ प्रस्तुत करता है", अमान्य करता है") विश्वास के द्वारा धार्मिकता बहुत अधिक पुराने नियम का अंश है। इसके द्वारा पूरी तरह अनुग्रह सिखाया जाता है। उदाहरणार्थ, पवित्र स्थान की सेवकाई क्या थी यदि किस प्रकार पापियों के बचाये जाने का एक प्रतिनिधित्व नहीं था, उनके कामों के द्वारा नहीं परन्तु उनकी ओर से एक प्रतिनिधि (यीशु) की मृत्यु के द्वारा?

बथशेबा के साथ अनैतिक प्रेम संबंध के बाद भी दाऊद को जिस प्रकार क्षमा मिली यह और क्या विश्लेषण करता है? निश्चित रूप से यह व्यवस्था पालन नहीं था जिसने उसे बचाया, क्योंकि उसने व्यवस्था के बहुत से सिद्धांतों को अपवित्र किया जो कि उसे बहुत ज्यादा दोषी ठहराया। यदि दाऊद व्यवस्था के द्वारा बचाया जाना था तो वह बिलकुल ही नहीं बचाया जा सकता था। धार्मिकता के उदाहरण के रूप में तय करता है। क्षमा परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य था। यहाँ पर तब, विश्वास द्वारा धार्मिकता का पुराने नियम से दूसरा उदाहरण है। वास्तव में, हालांकि बहुत से, प्राचीन इस्राएल में विधि सम्मत बने, यहूदी धर्म हमेशा अनुग्रह का धर्म रहा। विधिवाद इसका विकृत रूप था, आधार नहीं।

कुछ मिनटों के लिये दाऊद के पाप और पुन:स्थापन पर विचार करें (2 शमु० 11, 12; भजन 51). उस दुखद कहानी से स्वयं के लिये आप कौन-सी आशा ले सकते? क्या यहाँ पर एक पाठ है जिस प्रकार हम कलीसिया में जो गिरे हुए हैं, उनके साथ वर्ताव करते हैं?

सोमवार **अक्टूबर 30**

कर्ज या अनुग्रह?

पौलुस जिस विषय पर यहाँ चर्चा कर रहा है वह धर्मविज्ञान से भी बढ़कर है। यह उद्धार और परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को पूरी तरह प्रभावित करता है। यदि एक विश्वास करता है कि वह ग्राह्यता को जरूर हासिल कर सकता/ती है - कि उसे पवित्रता के एक निश्चित मानदंड को क्षमा प्राप्ति और धर्मी ठहराये जाने से पहले प्राप्त करना आवश्यक है - तब कितना स्वाभाविक है अंदर की ओर मुड़ना और स्वयं को, स्वयं के कामों का अवलोकन करना। धर्म अत्यंत ही स्वकेंद्रित हो सकता है, उस अंतिम वस्तु के लिये जिसकी किसी को जरूरत है।

इसके विपरीत, यदि कोई महान संवाद को नियंत्रित कर लेता है कि धार्मिकता परमेश्वर की ओर से एक उपहार है, पूर्णरूपेण अयोग्य और अनर्जित, उस व्यक्ति के लिये अपने केंद्र बिन्दु को स्वयं से परमेश्वर के प्रेम और दया की ओर मुड़ना कितना सहज और स्वाभाविक है?

और अंत में, परमेश्वर के चरित्र और प्रेम को कौन संभवत: अधिक प्रतिबिंबित करने वाला है - वह जो आत्मलीन है या वह जो परमात्मालीन है?

पढ़ें: रोमियों 4: 6-8 । पौलुस वहाँ पर विश्वास के द्वारा धार्मिकता के विषय पर किस प्रकार विस्तार देता है?

पापी को विश्वास के साथ मसीह के पास आना है, उसके गुणों को अपनाना है, अपने पापों को पाप वाहक के ऊपर डालना है, और उसके क्षमादान को प्राप्त करना था।

यह इस निमित्त था जिस कारण मसीह इस जगत में आया। इस प्रकार मसीह की धार्मिकता पश्चात्तापी और विश्वासी पापी पर अरोपित की जाती है। वह राजकीय परिवार का एक सदस्य बनता है।" *एलेन जी० ह्वाईड, सेलेक्टेड मैसेजेस, बुक 1, पेज 215*

तब पौलुस विश्लेषण करना जारी रखता है कि विश्वास द्वारा उद्धार केवल यहूदियों के लिये नहीं वरन् अन्यजातियों के लिये भी है (रोमि० 4: 9-12)। वास्तव में, यदि आप इसके तकनीक के बारे समझना चाहते हैं तो, अब्राहम यहूदी नहीं था; वह मूर्तिपूजक वंश से आया (यहोशू 24:2). उसके समय में अन्यजाति यहूदी अंतर नहीं था। जब अब्राहम धर्मी गिना गया (उत्प० 15:6), उसकी खतना भी नहीं हुई थी । इस प्रकार अब्राहम खतना और खतनारहित दोनों का पिता बना, इसके साथ-साथ पौलुस के लिये एक महान उदाहरण बना ताकि वह उद्धार के अपने तर्क को सर्वव्यापी व्यवहार कर सके। मसीह की मृत्यु हरएक के लिये थी, बिना राष्ट्रीयता या जाति भेद के (इब्रा० 2:9).

क्रूस की सर्वव्यापकता पर विचार करते हुए, प्रत्येक मानव के मोल के विषय क्रूस हमें क्या बतलाता है, जातीयता या नस्ली या राष्ट्रीय पूर्वाग्रह (भेदभाव) क्यों एक भयानक चीज है? हमारे स्वयं में पूर्वाग्रह के होने को पहचानना हम कैसे सीख सकते हैं? और परमेश्वर के अनुग्रह से इसे हम मनों से कैसे निकाल सकते हैं?

मंगलवार **अक्टूबर 31**

प्रतिज्ञा

500 वर्षों पूर्व आज के दिन मार्टिन लूथर ने अपने 95 सूत्रों को विटेनवर्ग चर्च की दीवाल पर टांग दिया। कितना दिलचस्प कि आज का विषय भी विश्वास के द्वारा धार्मिकता के केंद्र को पूरी तरह समझाता है।

रोमियों 4:13 में "प्रतिज्ञा" और "व्यवस्था" विपरीतार्थ हैं। पौलुस पुराने नियम की भूमिका को विश्वास द्वारा धार्मिकता की अपनी शिक्षा के लिये स्थापित करने की इच्छा कर रहा है। वह अब्राहम में एक उदाहरण पाता है जिसे सभी यहूदियों ने अपने पुरखे के रूप में उसे ग्रहण किया। धार्मिकता या अंगीकार व्यवस्था से बिलकुल अतिरिक्त अब्राहम के पास आया। परेमश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि वह "संसार का उत्तराधिकारी" होने वाला था। अब्राहम ने इस प्रतिज्ञा की प्रतीति की; वह यह कि उसने भूमिका को स्वीकार किया जिसका यह तात्पर्य रहा। परिणाम स्वरूप परमेश्वर ने उसे स्वीकार किया और इस संसार को बचाने के लिये उसके द्वारा कार्य किया। यह एक सशक्त नमूना रह जाता है कि अनुग्रह किस प्रकार पुराने नियम में प्रभाव डाल रहा था, यही है बेशक क्यों पौलुस ने इसे व्यवहार किया।

पढ़ें: रोमियों 4: 14-17। पौलुस यहाँ पर दर्शाना क्यों जारी रखता है किस प्रकार विश्वास के द्वारा उद्धार पुराने नियम का केंद्र था? देखें गला० 3: 7-9।

जैसे कि हमने प्रारंभ में कहा, इसे याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि पौलुस किन्हें लिख रहा है। ये यहूदी विश्वासी पुराने नियम की व्यवस्था में तल्लीन थे, और बहुतेरे यह विश्वास करने लगे थे कि उनका उद्धार उस पर स्थिर था कि कितनी बेहत्तरी से उन्होंने व्यवस्था का पालन किया, यद्यपि यह वह नहीं था जिसे पुराने नियम ने सिखाया।

इस गलतफहमी के उपचार की खोज में पौलुस तर्क करता है कि अब्राहम सिनाई में व्यवस्था से भी पहले, व्यवस्था के कर्मों के द्वारा नहीं पर विश्वास के द्वारा प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया। (यह कठिन होता क्योंकि व्यवस्था संपूर्ण तोराह एवं रैतिक तौर-तरीके - अभी तक अस्तित्व में नहीं था।

यदि पौलुस यहाँ पर पूरी तरह से नैतिक व्यवस्था की ओर संकेत कर रहा है, जो

सिनाई से भी पूर्व सिद्धांत में विद्यमान थी, तर्क वैसा ही है। संभवत: इससे बढ़कर! व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने की चाह करते हुए, वह कहता है, व्यवस्था विश्वास को व्यर्थ करता है इतना तक कि अनुप्युक्त। वे कठोर शब्द हैं, परंतु उसका तर्क यह है कि विश्वास रक्षा करता है, और व्यवस्था दोषी ठहराता है। वह उन चीजों के द्वारा उद्धार पाने की निरर्थकता के विषय सिखलाने की चेष्टा कर रहा जो निंदा की ओर अगुवाई करता है। हम सबने, यहूदी और अन्य जाति, व्यवस्था को अपवित्र किया है और इसलिये, हम सभी को वही चीज की जरूरत है जैसा अब्राहम को थी: यीशु को बचानेवाली धार्मिकता जो हमें विश्वास के द्वारा दी जाती है - विश्वास जिसने आखिरकार प्रोटेस्टेन्ट सुधार की अगुवाई की।

बुधवार **नवम्बर 1**

व्यवस्था और विश्वास

जैसा हमने कल देखा, पौलुस ने दिखाया कि परमेश्वर का अब्राहम के साथ बर्ताव सिद्ध किया कि उद्धार अनुग्रह की प्रतिज्ञा से आता है और व्यवस्था के द्वारा नहीं। इसलिये यदि यहूदियों ने बचाये जाने की इच्छा की, उन्हें उद्धार के लिये अपने कर्मों पर भरोसा करना छोड़ना होगा और अब्राहम की प्रतिज्ञाओं को स्वीकारना होगा, अब मसीह के आने में परिपूर्ण हुआ। यहूदी और अन्यजाति, प्रत्येक के लिये यह वैसा ही और वास्तविक है, जो सोचते हैं कि उनके "भले" काम हैं जो उन्हें परमेश्वर के पास उचित ठहराता है।

यह सिद्धांत कि मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा स्वयं को बचा सकता है सभी मूर्तिपूजक धर्म के आधार में पाया जाता है ज़ज़ जहाँ-कहीं भी यह संघटित हो, मनुष्य का पाप के विरोध में कोई अवरोध नहीं - *एलेन जी० ह्वाईट, युगों की अभिलाषा, अंग्रेजी में पेज सं० 35, 36* इसका क्या तात्पर्य है? क्यों यह विचार कि हम स्वयं को अपने कामों के द्वारा बचा सकते हैं पाप में हमें खुला छोड़ देता है?

पौलुस ने गलातियों में व्यवस्था और विश्वास के बीच संबंध को किस प्रकार विश्लेषण किया? गला० 3: 21-23

यदि एक व्यवस्था होती जो जीवन दे सकती, यह निश्चित रूप से परमेश्वर की व्यवस्था होती। और तौभी पौलुस कहता है कि कोई भी व्यवस्था जीवन नहीं दे सकती परमेश्वर की व्यवस्था भी नहीं, क्योंकि सबने व्यवस्था को दूषित किया है और इसलिये सब इसके द्वारा दोषी ठहराये जाते हैं।

परन्तु विश्वास की प्रतिज्ञा, अधिक पूर्णता के साथ मसीह के द्वारा प्रकट हुई, और सबको स्वतंत्र करती है जो "व्यवस्था के अधीन" होने को विश्वास करते हैं; यह है, इसके द्वारा उद्धार अर्जित करने की कोशिश के द्वारा दोषी होना और भार तले दबा होना। व्यवस्था एवं भार बन जाता है जब यह विश्वास के बिना, अनुग्रह के बिना, प्रेम किया जाता है, क्योंकि विश्वास के बिना, अनुग्रह के बिना, धार्मिकता के बिना, जो विश्वास के द्वारा आता है। व्यवस्था के अधीन होने का अर्थ पाप के दोष (निंदा) और भार के अधीन होना है।

आपका परमेश्वर के साथ चलने में विश्वास द्वारा धार्मिकता, कितना केंद्रित है? यह सुनिश्चित करने के लिये आप क्या कर सकते हैं कि यह दूसरे विश्वास की अवधारणाओं से विकृत नहीं होता, उस बिन्दु पर जहाँ आप इस निर्णायक शिक्षा की झलक को खो देते हैं? आखिरकार, इन दूसरी शिक्षाओं में इसके बिना कौन-सी अच्छाईयाँ हैं?

बृहस्पतिवार **नवम्बर 2**

व्यवस्था और पाप

हम अकसर लोगों को कहते सुनते हैं कि नई वाचा में व्यवस्था को लोप कर दिया गया है, और तब वे अवतरणों को उद्धृत करने की ओर अग्रसर होते हैं जिन्हें वे तर्क को सिद्ध करने के लिये विश्वास करते हैं। यद्यपि कथन के पीछे तर्क उचित नहीं जान पड़ता न ही धर्म विज्ञान ऐसा है।

पढ़ें: 1 यूहन्ना 2:3-6, 3:4, एवं रोमि० 3:20. व्यवस्था और पाप के बीच संबंध के विषय में ये हमें क्या बतलाते हैं?

कुछ सौ वर्ष पूर्व, आयरिश लेखक जोनाथान स्वीफ्ट ने लिखा: "परन्तु क्या कोई व्यक्ति कहेगाा कि यदि पीना, छल करना, झूठ बोलना, चोरी करना, संसद में कानून बनाने के द्वारा अंग्रेजी भाषा और शब्दकोषों से हटा दिये जायें तो हम अगली सुबह संयमी, ईमानदार और सिद्ध जागने चाहिए, और सत्य के प्रेमियों का? क्या यह अच्छा परिणाम है?" - *जोनाथान स्वीफ्ट, ए मोडेस्ट प्रोपोजल एण्ड आदर सेटैरीज, पेज 205*

इसी रीति से, यदि परमेश्वर की व्यवस्था समाप्त कर दी गई है, तब क्यों झूठ बोलना, हत्या, और चोरी करना, अभी भी पाप है या गलत है? यदि परमेश्वर की व्यवस्था बदल दी गई है, तब पाप की परिभाषा भी बदलनी चाहिए अथवा यदि परमेश्वर की व्यवस्था समाप्त हो जाती है तब पाप भी वैसा ही समाप्त हो जाता, और उसपर कौन विश्वास करता? (इसे भी देखें 1 यूहन्ना 1: 7-10; याकूब 1: 14, 15)।

नये नियम में व्यवस्था और सुसमाचार दोनों दृश्यमान होते हैं। व्यवस्था दिखाती है कि पाप क्या है; सुसमाचार पाप के उपचार की ओर संकेत करता है, जो यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान है। यदि व्यवस्था न होती तो पाप न होता, और तब हम किससे बचाये जाते? केवल व्यवस्था और इसके निरंतर वैधता के संदर्भ में क्या सुसमाचार मतलब रखता है?

हम अकसर सुनते हैं कि क्रूस में व्यवस्था को प्रभावहीन कर दिया। यह निश्चय ही व्यंगपूर्ण है, क्योंकि क्रूस प्रदर्शित करता है कि व्यवस्था को निरस्त या बदला नहीं जा सकता। यदि मसीह की क्रूस पर मृत्यु से पूर्व परमेश्वर ने व्यवस्था को न निरस्त किया या बदला, बाद में क्यों इसे बदतला? मनुष्य के पापी होने के बाद क्यों न व्यवस्था से छुटकारा मिल जाती और इस प्रकार मनुष्य को कानूनी दण्ड से बचाया जाता जो व्यवस्था का उल्लंघन लाता है? उस तरीके से, यीशु कभी नहीं मरा होता। यीशु की मृत्यु दिखाती है कि यदि व्यवस्था बदली जा सकती या निरस्त की जा सकती, यह पहले ही बदल दी जाती, क्रूस के बाद नहीं। इस प्रकार, यीशु की मृत्यु से बढ़कर व्यवस्था की निरंतर वैधता को कुछ नहीं दर्शाता, मृत्यु जो विधिपूर्वक पूरी हुई क्योंकि व्यवस्था का बदला नहीं जा सकता था। यदि हमारी पतित अवस्था में हमसे मिलने हेतु व्यवस्था बदली जा सकती, क्या यह पाप की समस्या का यीशु की मृत्यु से बेहत्तर समाधान न होता?

यदि व्यभिचार के विरुद्ध ईश्वरीय व्यवस्था न होती, क्या कर्म आज की स्थिति से जो इसके शिकार हैं कम वेदना और आहत उत्पन्न करता? आप का जवाब समझने में आपको कैसे मदद करता है कि परमेश्वर की व्यवस्था आज भी क्यों प्रभावी है? परमेश्वर की व्यवस्था को उल्लंघन करने के परिणामों के साथ आपके स्वयं के अनुभव क्या रहे हैं?

अतिरिक्त विचार: एलेन जी० ह्वाईट की किताब सेलेक्टेड मैसेजेस, बुक 1 में "ख्राईष्ट द सेन्टर ऑफ द मैसेज," पेज 388। पढ़ें: पेट्रियार्क्स एण्ड प्रोफेटस् में "द कॉल ऑफ अब्राहम," पेज 125-127; "द लॉ एण्ड द कॉवनेन्टस", पेज 363; द डिजायर ऑफ एजेस में "द सर्मन ऑन द माउण्ट", पेज 307, 308; "कन्ट्रोवर्सी", पेज 608; "इट इज फिनिश्ड", पेज 762, 763।

"काम करने वाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक समझा जाता है" (रोमि० 4:4). प्रेरित यहाँ पर उद्धृत अनुच्छेद का वर्णन करता है (उत्प० 15: 4-6) कि कर्मों के द्वारा नहीं वरन् विश्वास के द्वारा धार्मिकता - इससे निष्कर्ष और सिद्ध किया जा सके। शब्दों के अर्थ को वर्णन करते हुए वह सर्वप्रथम इसे करता है "यह उसपर धार्मिकता गिनी गई।" ये शब्द वर्णन करते हैं कि परमेश्वर अनुग्रह से ग्रहण (पापियों को) करता है और उनके कामों के द्वारा नहीं।''मार्टिन लूथर, कॉमेन्टरी ऑन रोमनस्, पेज 82

यदि शैतान मनुष्य को उसके स्वयं के काम को योग्यता और धार्मिकता के कामों के तौर पर मोल देने के लिये अगुवाई करने में सफल हो सकता, वह जानता है कि वह अपने छल के द्वारा उसे हरा सकता है, और उसे अपना बलि और शिकार बनाता है ....। क्रूस के मेमने के खून से दरवाजे के चौखट पर छींटें मारें और आप सुरक्षित हैं।'' - *एलेन जी० ह्वाईट, एडवेंटिस्ट रिबीव एण्ड सब्त हेराल्ड, सित०, 1889*

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:

- व्यवस्था के कामों के बिना केवल विश्वास के द्वारा उद्धार को समझना क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है? वह ज्ञान किस प्रकार की गलतियों से हमें बचाता है? उन्हें जो बाइबल की इस निर्णायक (जरूरी) शिक्षा के दर्शन को खो देते हैं कौन से खतरे इंतजार करते हैं?
- परमेश्वर की व्यवस्था की निरंतर वैधता के लिये आप कौन से दूसरे कारण दे सकते हैं, जबकि हम समझते हैं कि व्यवस्था और इसके प्रति आज्ञाकारिता वह नहीं जो हमें बचाता है?
- सुधार के अंतर्भाग में मूल विषय है हम कैसे बचाये जाते हैं? कौन-से तरीके हैं जिसमें हम प्रोटेस्टेन्टों और कैथोलिकों के बीच इस महत्त्वपूर्ण प्रसंग की विभिन्नता के विषय किसी पर बिना व्यक्तिगत हमला किये खुलकर और स्पष्ट रूप से बात कर सकते हैं?
- न्यायोचित (धर्मी) ठहराये पापियों के तौर पर, हम परमेश्वर से अनुग्रह और अनर्जित समर्थन पाने वाले बने हैं, जिसके विरुद्ध हमने पाप किया है। हम दूसरों के साथ किस प्रकार वर्ताव करते हैं यह तथ्य किस प्रकार प्रभाव डालना चाहिए? उनके प्रति हमारे अनुग्रह की बहुलता और समर्थन कैसा है, जिन्होंने हमारे साथ गलत किया है और वाकई हमारे अनुग्रह और समर्थन के हकदार नहीं हैं?